भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति : एक चिंतन

डॉ अनीता अग्रवाल*

सारांश -

महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। समय परिस्थिति एवं वातावरण के परिवर्तन के स्वरूप इनके पद सम्मान एवं प्रतिष्ठा में भी परिवर्तन होता आ रहा है। किसी भी समाज, सभ्यता एवं देश के विकास का मूल्यांकन वहाँ की आधी आबादी अर्थात महिलाओं से किया जाता है। महिलाओं के विकास एवं उनकी प्रास्थित पर हम ध्यान केंद्रित करते है तो दो तथ्य निकल कर सामने आते है, एक यह की प्राचीन काल से लेकर मध्य काल और मध्य काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति में काफी उतार-चढ़ाव देखे गए है। समाज ने कभी सम्मान देकर उन्हें गौरवान्वित किया तो कभी अपमानित कर उसका तिरस्कार किया।

कुशल गृहिणी, उद्यमी, श्रम शक्ति होने पर भी उनकी क्षमता, प्रतिभा, साहस एवं कार्यों को वह स्थान नहीं दिया गया जो वास्तव में उनका अधिकार है।3 श्रम की अनदेखी क्षमता का शून्य आँकलन आलोचनाओं की परिपाठियों ने महिलाओं से उनके हक छिन लिए है। सामाजिक तौर पर महिलाओं को त्याग, सहनशीलता व शर्मिलेपन का ताज पहनाया गया है। जिसके भार के तले दबी महिलाओं ने अपने अस्तित्व को भुला दिया। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के ज्यादातर देशों की माहिलाए भेदभाव का शिकार होती आई है। सभी स्तरों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखी जाती है।

कुञ्जी शब्द - भारतीय समाज, महिला, समाज, सभ्यता, देश, विकास, मूल्यांकन, प्राचीन काल, मध्य काल, आधुनिक काल, कुशल गृहिणी, उद्यमी, श्रमशक्ति, क्षमता, प्रतिभा, साहस, अधिकार, त्याग, सहनशीलता, लज्जा, भेदभाव, सामाजिक संरचना, पितृसत्ता, हिंसा, सामाजिक व्यवस्था, संयुक्त राष्ट्र संघ, समानता।

प्रस्तावना -

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास-रजत-नग-पग-तल में,
पीयूष-स्त्रोत्र सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।[1]

प्रसिद्ध छायावादी कवि, नाटककार जयशंकर प्रसाद ने अपने महाकाव्य '**कामायनी**' में नारी का बहुत ही सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है।

नारी है स्नेह की गंगा, नारी है जीवन का सार,
हर युग मे उसने दिखाया, उसका अस्तित्व अपार।

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में समय के साथ-साथ अनेक बदलाव आए है। रूढ़िवादी मानसिकता के कारण आज के समय में भी महिलायें अपने आपको पिछड़ा हुआ पाती है। महिलाओं को जन्म से लेकर तो मृत्यु पर्यंत तक अनेक कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। कई सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएं महिलाओं के विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इन सबके बाद भी महिलाओं की मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। इनके विकास के कई उपाय किए जा रहे है फिर भी उनकी स्थिति दयनीय है।

महिलाओं की स्थिति में विभिन्न परिवर्तन हुए है। समय के साथ-साथ कई उतार-चढ़ाव आए जिसका प्रभाव समाज की गरीब एवं मध्यम वर्ग की महिलाओं पर अधिक पड़ा। जिससे की देश का विकास भी प्रभावित हुआ है क्योंकि किसी भी देश के विकास मे वहाँ की महिलाओं की भूमिका भी पुरुषों के समान ही महत्वपूर्ण रहती है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक महिलाएं अपने अधिकारों से वंचित रही है। उन्हें बहुत कम अधिकार समाज में प्राप्त हो पाए है। भारतीय परंपरागत सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं को अपना पूरा जीवन किसी न किसी पुरुष के संरक्षण में व्यतीत करना पड़ता है, जिससे की उनकी पुरुषों पर निर्भरता बड़ जाती है महिलाओं को भी अपने अधिकारों के प्रति सचेत होना होगा।

- **प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति :-**

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति में कई उतार-चढ़ाव आए है उनकी स्थिति में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। प्राचीन समय में देखा जाए तो महिलाओं की स्थिति बहुत उन्नत थी, इन्हें इस युग में कई अधिकार प्रदान किए गए थे। परिवार, शिक्षा, सामाजिक कार्य एवं संपत्ति में उनको पुरुषों के समान ही अधिकार प्राप्त था। महिलाओं को घर की लक्ष्मी एवं शोभा कहा जाता था। वैदिककाल में महिलाओं को पूजनीय माना जाता था, जिसका

[1]जयशंकर प्रसाद, कामायनी, श्रद्धा सर्ग।

पता हमें इस सूक्ति से चलता है - **यत्र नार्यस्तुपूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः**[2]। अर्थात् जहां नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। पौराणिक काल में महिलाओं की स्थिति में थोड़ी गिरावट आई जिसके तहत उन्हें कई तिरस्कार का सामना करना पड़ा। पितृसत्तात्मक सामाजिक ढ़ाचे में महिलाओं को धर्म, रीतिरिवाज के नाम पर शोषण और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था।

बौद्ध काल में बौद्ध धर्म की स्थापना का उद्देश्य समाज में व्याप्त वर्णव्यवस्था को समाप्त करना एवं समाज में समानता की स्थापना करना था। बौद्ध काल के प्रारंभ में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया किन्तु बाद में महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार प्रदान किया गया। बौद्ध शिक्षा केंद्रों में महिला और पुरुषों को शिक्षा का समान अधिकार प्राप्त था इसके प्रमाण हमारे बौद्ध धर्म ग्रंथों में भी मिलते है।

- **मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति :-**

मध्ययुग में महिलाओं की स्थिति जो थोड़ी बहुत ठीक थी वह भी खत्म हो गई। महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई उनको मौलिक रूप से स्वतंत्र रहने का अधिकार नहीं था। अधिकतर वर्ग की महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा का चलन प्रारंभ हो चुका था। स्त्रियों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अनुमति नहीं थी। अनमेल विवाह का संताप भी मध्यमवर्गीय महिलाओं को झेलना पड़ रहा था। उच्च वर्ग की मुस्लिम महिलाओं का जीवन स्तर ही अच्छा था, किन्तु स्थाई रूप से उनके पास भी कोई आर्थिक सुरक्षा प्राप्त नहीं थी। इस युग में दास प्रथा ने भी विकराल रूप धारण कर लिया था। विवाह के समय दासियों को बड़ी संख्या में साथ में भेजा जाता था, जिसके कारण समाज में बहुत अनाचार बढ गया था।

पहले हमारा देश कई रियासतों में बटा हुआ था जिसके कारण आए दिन युद्ध होते थे और जो मुस्लिम राज्य युद्ध में विजय होता था वो हारे हुए हिन्दू राज्य की रियासत की महिलाओं को अपने साथ ले जाते और उनका शोषण करते थे। मुस्लिम आक्रमणकारियों के आगमन से ही कई कुरीतियों की शुरुआत हुई, इसी के साथ महिलाओं की स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गई और घर की चार दीवारों में ही सीमित रह गई। पुरुषों का वर्चस्व बढ़ने लगा और महिलाएँ गृहिणी बन कर रह गई। महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया और उन्हें पुरुषों के समान कोई भी अधिकार नहीं दिए गए। जिससे उनका शोषण होने लगा और जिन्हें शिक्षा मिली वे शासक वर्ग से संबंधित थीं।

- **आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति :-**

मध्यकाल की अपेक्षा आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने का भरसक प्रयास किया गया है। भारतीय संविधान के अनुसार पुरुष और महिला को समान अधिकार प्रदान किए गए

[2] मनुस्मृति - 3.56

है, इसके बावजूद भी माहिलाए विकास और सामाजिक दृष्टि से पुरुषों से काफी पीछे है। जिस समाज की माहिलाए उपेक्षित है,वह समाज कभी भी प्रगति नहीं कर सकता।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाएं पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, किन्तु भारतीय समाज एक पुरुष प्रधान समाज है, जिसमें माहिलाए कितना ही आगे क्यों न बड़ जाए फिर भी उसे समाज की रूढ़िवादी मानसिकता का सामना करना ही पड़ता है। हमारा समाज चाहे कितनी भी तरक्की कर ले कहने को लोग चाँद पर भी चले गए है लेकिन महिलाओं के प्रति उनकी सोच आज भी संकुचित ही है और जब तक यह संकुचित सोच बड़ी नहीं होगी तब तक महिलाओं के उद्धार के लिए चाहे जीतने भी प्रयास किए जाए सब व्यर्थ ही है।

आज के समय मे अगर देखा जाए तो किस प्रकार महंगाई बड़ रही है, घर चलाने के लिए महिला एवं पुरुष दोनों को घर से निकाल कर काम करना पड़ता है, जब महिलाए घर से बाहर निकल कर काम करती है, तो उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारे समाज की यह मानसिकता है, कि पत्नी से यह उम्मीद की जाती है, कि वो पति से पहले घर पहुचें, घर का सारा काम स्वयं करें और बच्चों की सारी जिम्मेदारी भी स्वयं उठाए यही मानसिकता हमें परिवर्तित करनी है। बच्चों और घर को संभालने की जितनी जिम्मेदारी महिलाओं की है, उतनी ही पुरुषों की भी होनी चाहियें तभी समाज में समानता का भाव आएगा।

महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। समय परिस्थिति एवं वातावरण के परिवर्तन के स्वरूप इनके पद सम्मान एवं प्रतिष्ठा में भी परिवर्तन होता आ रहा है। किसी भी समाज, सभ्यता एवं देश के विकास का मूल्यांकन वहाँ की आधी आबादी अर्थात महिलाओं से किया जाता है। महिलाओं के विकास एवं उनकी प्रास्थित पर हम ध्यान केंद्रित करते है तो दो तथ्य निकल कर सामने आते है, एक यह की प्राचीन काल से लेकर मध्य काल और मध्य काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति में काफी उतार-चढ़ाव देखे गए है। समाज ने कभी सम्मान देकर उन्हें गौरवान्वित किया तो कभी अपमानित कर उसका तिरस्कार किया। कुशल गृहिणी, उद्यमी, श्रम शक्ति होने पर भी उनकी क्षमता, प्रतिभा, साहस एवं कार्यों को वह स्थान नहीं दिया गया जो वास्तव में उनका अधिकार है।[3] श्रम की अनदेखी क्षमता का शून्य आँकलन आलोचनाओं की परिपाठियों ने महिलाओं से उनके हक छिन लिए है।

सामाजिक तौर पर महिलाओं को त्याग, सहनशीलता व शर्मिलेपन का ताज पहनाया गया है। जिसके भार के तले दबी महिलाओं ने अपने अस्तित्व को भुला दिया। केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के ज्यादातर देशों की माहिलाए भेदभाव का शिकार होती आई है। सभी स्तरों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखी जाती है। इसका प्रारंभ से ही सामाजिक संरचना में

[3]मधुसूदन त्रिपाठी,महिला विकास, ओमेगा पुब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010 - पृ. 10।

पितृसत्तात्मक सोच का होना है । जिसमें पुरुषों को महिलाओं से श्रेष्ठ समझा जाता है । जहां संसाधनों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया पर और विचारधारा पर पुरुषों का नियंत्रण होता है। इस प्रकार महिलाओं पर हिंसा सामाजिक व्यवस्था का अंग बन गया। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार प्रत्येक तीन में से एक महिला हिंसा का शिकार होती है और ज्यादातर हिंसा परिवार के भीतर लड़ी जाती है। माहिलाए मानव विकास सूचकांक में पुरुषों से पिछड़ी है। जीवन प्रत्याशा, स्वास्थ्य, पोषण, समान वेतन, स्वामित्व, संपत्ति में भी वह दूसरे पायदान पर है । इतना ही नहीं हिंसा, छेड़छाड़, यौन उत्पीड़न, दुष्कर्म के साथ भय में जीती है।[4] विवाह से पहले और विवाह के बाद भी मानसिक, शारीरिक, यातनाओं से गुजरना पड़ता है।

अब यह सर्वज्ञात है कि महिलाए समाज का अभिन्न अंग है एक बड़ा हिस्सा है बाद इसके भी उनके साथ हिंसा, अन्याय होता है। ये स्वीकारा भी जाने लगा है और इसकी भर्त्सना भी की जाने लगी है । नीतिगत वक्तव्य महिलाओं की सुरक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील दिखाई दे रहे है। सरकारी-गैर सरकारी संगठनों के द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास किए जा रहे है। उन्हें अवसर प्रदान किए जा रहे है ताकि वे अपनी खोई हुई स्थिति, सम्मान एवं वर्चस्व पुनः प्राप्त कर सके और एक गरिमा पूर्ण जीवन जी सके।

- **महिला कानूनों का वर्तमान प्रभाव :-**

महिलाओं के प्रति समाज के नजरिए को बदलने के निरंतर प्रयास किए जा रहे है जिससे महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है । महिलाओं ने संविधान में प्रदत्त के बल पर शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक, खेलकुद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयाम तय किए। आज महिलाए आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी,आत्मविश्वासी है। जिसने पुरुष प्रधान चुनौतिपूर्ण क्षेत्रों मे भी अपनी योग्यता प्रदर्शित की है। वह केवल कुशल गृहिणी, शिक्षिका ही न बनकर डाक्टर, इंजीनियर, पायलेट, वैज्ञानिक, तकनीकि, सेना, पत्रकारिता, खेल जैसे नवीन क्षेत्रों को अपना रही है। राजनीति, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में भी वह अपनी योग्यता एवं नेत्रत्व का संचालन कर रही है। 21वीं सदी में अब महिलाओं का दोयम दर्जा अब पुरुष प्रधान समाज में बराबरी का हो गया है । वह व्यापार, निजी क्षेत्र, उद्यम में नए अवसर का लाभ उठा रही है । भूमंडलीय की बयार अब नारी के हिस्से में आ गई है। आज महिला उन क्षेत्रों में अपने कौशल का प्रदर्शन कर रही है जहां होने की शायद समाज ने कभी कल्पना भी न की थी।

आज महिलाए स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा अपने प्रति होने वाले अत्याचार, हिंसा एवं शोषण को समाज के सामने लाने लगी, उनकी हिचकिचाहट कम हो गई है। संवैधानिक प्रयासों के बूते न केवल वे समान हो रही बल्कि सशक्त एवं आत्मनिर्भरता की नई इबारत लिख रही है। अब पिता

[4] अनुषा पुनिया, घर से बाहर तक सुरक्षा के कानून, अगस्त 2018, सूचना भवन, नई दिल्ली।

की संपत्ति में समान अधिकार से लेकर भरण पोषण, समान तलाक,स्वेच्छा से जीवन साथी चुनने एवं स्वतंत्र रोजगार प्राप्त कर रही है क्योंकि आज महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में पहले से काफी बदलाव आया है। वे शिक्षा के साथ जागरूक हो रही है और अपने अधिकारों को समझ कर अन्याय के खिलाफ संगठित हो गई है। महिलाओं के प्रति घृणित कार्य करने वाले दोषी को कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। विभिन्न महिला केंद्रित कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। जिससे वे लाभान्वित हो रही है।

- **निष्कर्ष :-**

महिलाओं के विकास एव उन्नति की प्रक्रिया एक लंबी प्रक्रिया है। आज महिलाए अपने अधिकारों को जान एवं समझ गई है। वे स्वयं भी अपने आप को समाज का नागरिक मान रही है। सरकारी योजनाओं, संवैधानिक प्रयासों ने महिलाओं की स्थिति में बहुत परिवर्तन किए है। जो महिलाए कभी सर पर घूँघट स्वतंत्र निर्णय लेने से वंचित थी आज आजाद होकर अपने विचारों एवं कार्यों को संधारित कर रही है और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि अगर इन्हे अधिकारों से वंचित रखा गया तो देश एवं समाज का वास्तविक विकास अवरुद्ध हो जाएगा। इसके लिए और ठोस कारगर कदम उठाए जाने बाकी है और ये सिर्फ सरकार से ही संभव नहीं होगा इसके लिए विचारों में भी परिवर्तन की आवश्यकता है साथ ही स्वयं महिलाओं को भी अपने अधिकारों के लिए सामने आना होगा और निरंतर प्रयासरत रहना होगा।

सन्दर्भसूची :-

1. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, कविता कोष .
2. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याएँ – Quest Journals .
3. मनु स्मृति, व्या. पं. गिरिजा प्रसाद द्विवेदी .
4. Exploring The Status Of Women In Indian Society: A Descriptive Analysis.
5. Status of Women in Indian Society – International Journal of Research in Social Sciences & Humanities.

*अतिथि प्राध्यापक, हिंदी, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन।